Read India
An Imprint of Pratham Books
रोन्दू और मुक्की
हरमिन्दर ओहरी
RGF Pratham
SERIES

Original Story (*English*)
Sniffles the Crocodile and Punch the Butterfly by Herminder Ohri
© Rajiv Gandhi Foundation-Pratham Books, 2004

Third Hindi Edition: 2009

Illustrations: Herminder Ohri
Design: Moonis Ijlal
Hindi Translation: Pratham Books Team

ISBN: 81-8263-039-8

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526
New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Pratham Books, Delhi

Printed by:
Shubhodaya Printers, Bangalore 560 004

Published by: Pratham Books | www.prathambooks.org

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

रोन्दू और मुक्की

लेखन एवं चित्रांकन
हरमिन्दर ओहरी

हिन्दी अनुवाद
प्रथम पुस्तक समूह

बहुत दूर एक जंगल में झील थी। झील में एक मगरमच्छ रहता था। बात बात पर रो पड़ता था। मोटे-मोटे आँसू अक्सर उसकी आँखों से टपकते थे। उसका नाम ही पड़ गया था—रोन्दू।

रोन्दू के माँ-बाप उसके रोने-धोने से तंग आ गये थे। वे उससे कहते, ''अब बस भी करो बेटा। मगरमच्छ हो, मगरगच्छ की तरह रहो। जाओ, जाकर शिकार कर लाओ।''

शिकार के नाम से ही रोन्दू फिर फूट-फूट कर रोने लगता। अभी तक उसके माता-पिता ही शिकार करके उसे खिलाते थे।

3

रोन्दू अपने आपको बदसूरत समझता था। और सोच-सोच कर उसकी आँखों में पानी भर आता। वह मगरमच्छ के बजाय एक सीधा-सादा, भला-सा प्राणी बनना चाहता था।

रोन्दू की सबसे अच्छी दोस्त थी मुक्की।

मुक्की एक सुनहरी पीली तितली थी। वह बड़ी और ताकतवर बनना चाहती थी। वह बात-बात में कहती, "अभी मारूँगी एक मुक्का!"

रोन्दू और मुक्की की जोड़ी सचमुच मज़ेदार थी। जब रोन्दू झील में तैरता तो मुक्की उसके सिर पर बैठती। सारे मगरमच्छ उन्हें देखकर उनका मज़ाक उड़ाते। पर रोन्दू और मुक्की उनकी ज़रा-सी भी परवाह नहीं करते।

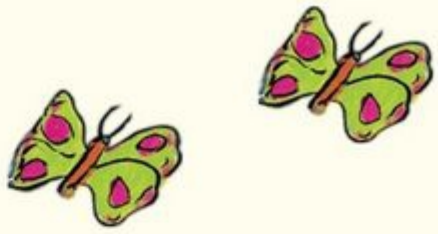

एक दोपहर मुक्की रोन्दू के कान के पास आकर बोली, ''मैंने बंदूकें लिये हुए दो आदमियों को इधर आते देखा है। शायद वे मगरमच्छों को, उनकी चमड़ी के लिए मारना चाहते हैं।''

रोन्दू बोला, ''क्या उनकी खुद की चमड़ी नहीं है?''

मुक्की ने उत्तर दिया, ''मैं तो बस इतना जानती हूँ कि सारे मगरमच्छों को छिप जाना चाहिये।''

''लेकिन मुक्की, तुम्हें भी तो गोली लग सकती है?'' रोन्दू बोला।

मुक्की ने समझाया, ''नहीं रोन्दू। मेरी दादी ने बताया था कि तितलियों को जाल में फँसाकर पकड़ा जाता है।'' यह कहकर वह उड़ गयी।

रोन्दू को रोना आ रहा था पर उसने अपने आँसू किसी तरह रोकते हुए मगरमच्छों से कहा, "बन्दूकें लिये हुए शिकारी आ रहे हैं। जल्दी-जल्दी छिप जाओ।"

पहले तो मगरमच्छों ने रोन्दू की बात को हँस कर उड़ा दिया। लेकिन जब पैरों की आहट आने लगी तो वे सब चौकन्ने हो गये। सारे मगरमच्छ गहरे पानी में चले गये।

झील में पड़ी लकड़ी को मगरमच्छ समझकर शिकारी गोली चलाने लगे।

इतने में सैकड़ों-हज़ारों तितलियों ने उन्हें घेर लिया और बेहद परेशान करने लगीं।

तितलियों से अपने आपको बचाते हुए शिकारी कहने लगे, ''यहाँ तो एक भी मगरमच्छ नहीं है। बस तितलियाँ ही तितलियाँ हैं। अगली बार जाल लेकर आयेंगे।''

सारे मगरमच्छ इकट्ठा हुए और बोले,

''शुक्रिया रोन्दू।''

''शुक्रिया मुक्की।''

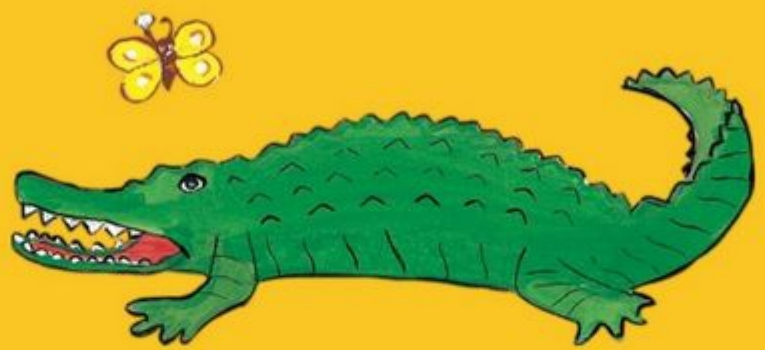

अगले ही दिन रोन्दू ने शिकारियों को जाल लेकर आते हुए देखा। उसे मुक्की की बात याद आ गयी। उसने तुरन्त मुक्की को खबर दी, ''जाल लेकर शिकारी आ रहे हैं, तितलियों को पकड़ने।''

सारे मगरमच्छ झील के किनारे पहुँच गये। तितलियाँ उन पर सवार हो गयीं।

जैसे ही वे आदमी अपना जाल बिछाने लगे, मगरमच्छों ने उन्हें चारों तरफ़ से घेर लिया। मगरमच्छ सटाक-सटाक अपने जबड़े खोलते और बन्द करते। सबसे आगे-आगे रोन्दू भयानक तरीके से अपने दाँत पीसता हुआ आया और तेज़ी से पूँछ फटकारता रहा। यह सब देखकर डरे हुए शिकारी दुम दबाकर भाग निकले।

सभी मगरमच्छ रोन्दू से बहुत खुश हुए। रोन्दू ने पहली बार एक मगरमच्छ जैसी बहादुरी दिखाई थी। अब रोन्दू को भी अपना मगरमच्छ होना अच्छा लगने लगा था।

सारी तितलियाँ मगरमच्छों के चारों ओर पंख फड़फड़ा कर नाचने और गाने लगीं,

''शुक्रिया रोन्दूमल।''

''शुक्रिया मगरमच्छों।''

रोन्दूमल ने शर्माते हुए कहा, ''इसमें भला कौन सी बड़ी बात है। आखिर दोस्त किसलिए होते हैं? एक दूसरे का ख्याल रखने के लिए ही न !''

ऐसे दोस्त किस काम के जो एक दूसरे के काम न आयें, चाहे वह रोन्दू मगरमच्छ और मुक्की तितली जैसे दोस्त क्यों न हों। दो दोस्तों की बुद्धिमानी की कहानी है, 'रोन्दू और मुक्की'।

इस श्रृंखला की अन्य पुस्तकें

हमारी खूबसूरत दुनिया ● एक बड़ी मुसीबत

नौका की सैर ● छुटकू मकड़ा

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये www.prathambooks.org पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली गैर मुनाफ़ा संस्था है।

Age Group: 7-10 years
Rondoo Aur Mukki (Hindi)
MRP: Rs. 20.00

ISBN 81-8263-039-8

9788182630390